बाल सुमन
2015-16
स्कूल चलें हम

विद्यालय की झलकियाँ

: शुभकामना - सन्देश :

विद्यालय परिवार द्वारा "बाल सुमन" नामक हस्तलिखित पत्रिका का प्रकाशन एक अनुपम अनुकरणीय पहल है। ऐसे अभिनव प्रयास छात्रों की मौलिकता को मूर्त रूप देने में अत्यंत कारगर सिद्ध होते हैं।

किसी भी विद्यालय से प्रकाशित पत्रिका में छात्र-छात्राओं द्वारा दी गई रचनाऐं, विचार, कहानियाँ आदि, उनके बौद्धिक विकास को तो दर्शाती ही हैं, ऐसे प्रयासों से छात्र-छात्राओं के आत्मविश्वास में भी आशातीत वृद्धि होती है।

वर्तमान संचार माध्यमों के युग में आवश्यकता इस बात की है कि छात्र-छात्राऐं पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की ओर आकर्षित हों, ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके एवं वे काल्पनिक लोक से बाहर निकलकर यथार्थ जीवन की वास्तविकताओं से परिचित हो सकें।

विद्यालय परिवार एवं छात्र छात्राओं को यशोज्ज्वल भविष्य की असीम शुभकामनाऐं।

[signature]

संदेश :-

विद्यालयीन पत्रिकाओं के माध्यम से हम :

- बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता विकसित कर सकते हैं।
- उनको नई खोज की प्रेरणा दे सकते हैं।
- उनकी सामान्य जिज्ञासाओं का समाधान कर सकते हैं
- उनकी कल्पनाशीलता को पंख दे सकते हैं।
- उनके आत्मविश्वास में वृद्धि कर सकते हैं।
- उन्हें पाठ्यक्रम से पृथक कुछ पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
- हस्तलिखित पत्रिकाओं से दूसरों के हाथ को लिखी सामग्री पढ़ने की क्षमता विकसित कर सकते हैं

शा. प्रा. वि. नगपुरा की पत्रिका 'बाल सुमन' इन उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल हो, इस हेतु शुभकामनाएँ

(हस्ताक्षर)

जयन्त जो[illegible]
सहा. जिला [illegible]
जि. शि. के. [illegible] धार

सन्देश -

शा. प्रा. वि. मगजपुरा द्वारा बच्चों के लिए एक हस्तलिखित पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, यह जानकर हर्ष हुआ। शिक्षक श्री इरफान पठान उत्साही और समर्पित शिक्षक है। निश्चित ही इनका यह प्रयास बच्चों की प्रतिभा को निखारने में सक्षम होगा।

शाला परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ

(जे. के. शर्मा)
जिला शिक्षा अधिकारी
जिला धार (म.प्र.)

-: शुभकामना संदेश :-

प्राथमिक विद्यालय मगजपुरा के शिक्षको एवं बच्चों के द्वारा विगत वर्षो से हस्तलिखित पत्रिका "बाल सुमन" का निर्माण किया जा रहा है। इनका यह प्रयास सराहनिय है।

यह पत्रिका बच्चों मे स्वयं के हाथ लिखित अक्षरो को पढ़ने की दक्षता का विकास करेगी। पत्रिका मे की गई चित्रकला बच्चों की क्रियात्मकता एवं सृजनात्मकता का प्रतिक है। इस पुस्तक मे निरन्तर निखार आता रहे इन्ही शुभ-कामनाओ के साथ।

बी. के. कुमारिया
प्राचार्य
हाई स्कूल ललवाड़ा

शुभकामना संदेश

बच्चों की दुनिया बड़ों से एकदम अल
होती है; वे उत्साह, उमंग, जिज्ञासा से भरपूर
हैं। हर नई क्रिया जैसे फूल से फल का बनना,
आसमान से बारिश होना, वायुयान का उड़ना
मोबाइल पर दूर बैठे किसी नजदीकी से बात क
उनकी जिज्ञासा और सामर्थ्य को बढ़ावा देता
अपने घर परिवार के बाद सबसे ज्यादा समय
विद्यालय में ही गुजारते हैं अतएव एक बच्चे से
मानव में परिवर्तन का कार्य विद्यालय के अतिरि
और कहीं संभव नहीं है। विद्यालय में बच्चों के
सर्वांगीण विकास के समस्त अवसर मिलने च
मुझे पूर्ण विश्वास है कि बच्चों की साहित्यिक सृ
त्मकता सह शैक्षिक गुणों के विकास में विद्यालयीन
हस्तलिखित पत्रिका 'बाल-सुमन' एक अच्छ
आधार सिद्ध होगी। पत्रिका प्रकाशन पर हार्दि
शुभकामनाएँ

मंगलेश व्यास
जिला परियोज
समन्वयक; धा

विद्यालय परिवार की ओर से

बच्चों में लेखन और पठन कौशल विकास व सृजनात्मकता के लिए विद्यालय परिवार सतत प्रयास रत रहता है। बच्चों द्वारा किए गए संकलन को एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करने का प्रयास विगत 3 वर्षों से किया जा रहा है। इसमें वरिष्ठ अधिकारियों एवं प्रबुद्धजनों का निरन्तर मार्गदर्शन मिलता रहा है, इस हेतु संस्था के बच्चे एवं शिक्षकगण सदैव आभारी रहेंगे।

बच्चों के द्वारा स्वहस्ताक्षर रचित पुस्तिका में वर्तनी दोष संभावित है, पत्रिका में निखार ला सके इस हेतु पाठकों से मार्गदर्शन एवं सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

इरफान पठान (प्रधान पाठक)

विद्यालय पत्रिका बालसुमन बच्चों के लेखन विकास में सहायक होगी मुझे आशा है ऐसे नवाचार अन्य शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगा। बच्चों के प्रयास सफल हो, मेरी शुभकामनाएं है।

श्रीमती नूतन मालवीय (सहा. अध्यापिका)

बालपत्रिका बालसुमन छोटे-छोटे बच्चों द्वारा नवाचार के प्रयास का हिस्सा है, बच्चों की कड़ी मेहनत उन्हे आगे भी सफलता का मार्ग दिखाएगी।

— श्रीमती ललिता वास्कले (सहा. अध्यापिका)

पुटकी

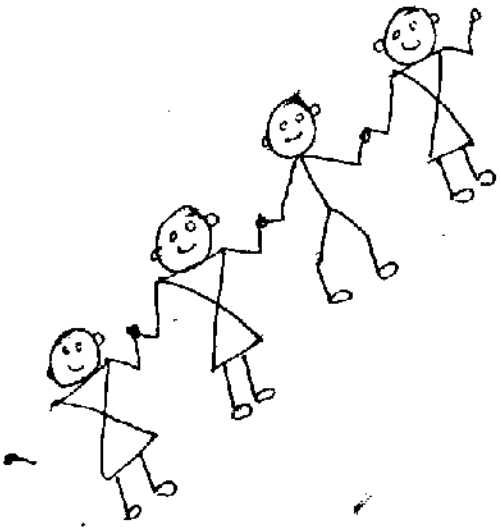

बचपन मे सब छोटे बच्चे
करते गड़बड़ काम
लड़ते और झगड़ते ऐसे
सबकी नींद हराम
दिन भर मस्ती करते रहते
करे न ये आराम
धमा चौकड़ी ऐसी जैसी
घोड़ा बिना लगाम ।

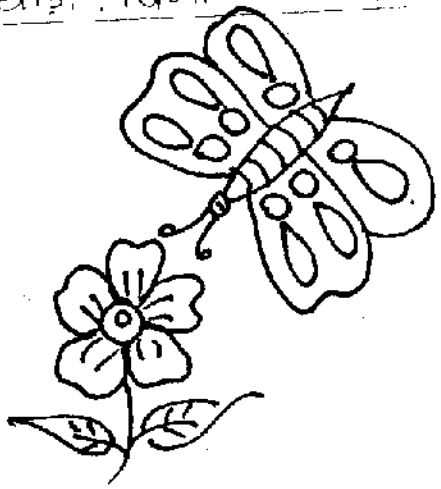

[illegible] यो प्यारी तितली
[illegible] से न्यारी तितली
[illegible] र मंडराती
[illegible] लियों मुस्काती
[illegible] दिवाने हैं
[illegible] र कब माने हैं ।
[illegible] दौड़ लगाते
[illegible] कड़ ना पाते ।।

पूछो तो जाने

• मेरे पास 50 रु हैं

20	का नाश्ता किया	30 बचे
15	का नाश्ता किया	15 बचे
09	का नाश्ता किया	06 बचे
06	का नाश्ता किया	00 बचे
50		51 कैसे

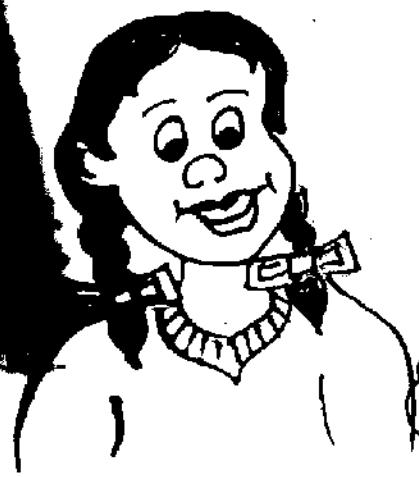

• बेटी है तो कल है •

देखो हँस न देना

चिंटू पापा से : आप ने नया नौकर क्यों रखा है।
पापा : बेटा घर का सारा काम करने के लिए।
चिंटू : तो फिर वह मेरा होमवर्क क्यों नहीं कर देता

लड़का - माँ आज मेरा दोस्त घर आ रहा है।
घर के सब खिलौने छिपा दो।
माँ - तेरा दोस्त चोर है क्या?
लड़का - नहीं वो अपने खिलौने पहचान लेगा।

टिचर (गप्पू से) तुम आज फिर इतनी देर से स्कूल क्यों आए? गप्पू : सर, असल में बबलू का एक सिक्का गुम हो गया था। टिचर : अच्छा, तो तुम क्या उसे ढूंढने में मदद कर रहे थे? गप्पू : नहीं सर, मैं ही तो उस के सिक्के पर खड़ा था।

बबलू (दादी से) : दादी माँ ठंड में मुझसे पानी से मुंह धोना मत कहिए मुझे ठंड लगती है।
दादी माँ : पर बेटा, जब हम तुम्हारी उम्र के थे तो ठंड के दिनों में भी ५ बार ठंडे पानी से मुँह धोते थे
बबलू : ओहो, अब मैं समझा कि आप का चेहरा इतना सिकुड़ क्यों गया है।

जलाएँ ज्ञान का दीपक,
चलो हम आज मिल करके

राष्ट्रीयपक्षी - मोर

हमारा प्यारा राष्ट्रीय पक्षी है मोर। 1963 मे इसे राष्ट्रीय पक्षी की मान्यता मिली। वर्षा ऋतु में इसका मोहक नृत्य देखते ही बनता है। बादलों को देखते ही मोर अपने पंखों को फैलाकर झूम - झूम उठता है और उसे नाचता हुआ देख दर्शकों का मन - मयूर भी झूम उठता है। मोर के मोहक नृत्य पर कवियों की कविताएं भरी पड़ी है।

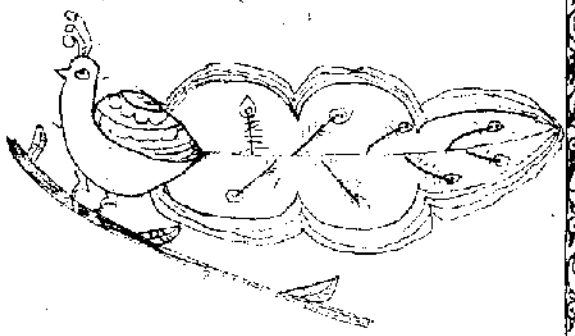

अनमोल बातें

जीतने के लिए कोई चीज है - तो - हृदय
धारण करने के लिए कोई चीज है तो - संतोष
पीने के लिए कोई चीज है तो - क्रोध
खाने के लिए कोई - चीज है - तो - गम
देने के लिए कोई चीज है तो - दान
दिखाने के लिए कोई चीज है तो - दया
लेने के लिए कोई चीज है तो - ज्ञान
कहने के लिए कोई चीज है तो - सत्य
करने के लिए कोई चीज है तो - परिश्रम
रखने के लिए कोई चीज है तो -- इज्जत
फेंकने के लिए कोई चीज है तो - ईर्ष्या
छोड़ने के लिए कोई चीज है तो - मोह

— मुस्कान पटेल

हमारा प्रदेश।

मैं भारत देश के मध्य स्थित प्रदेश हूँ इसलिये मेरा नाम मध्यप्रदेश है। मेरे आस - पास 5 राज्य स्थित है, जो मेरे पड़ौसी राज्य कहलाते है। मेरे 50 जिले और 10 संभाग है। मुझे देश का हृदय कहलाने का गौरव प्राप्त है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल है।

• स्वच्छ ग्राम, स्वच्छ प्रदेश,

गिनती - गीत

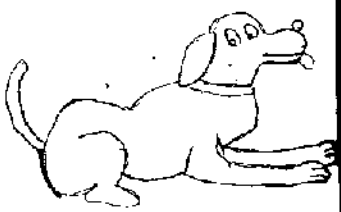

एक चूहे राजा - चूहा करता नाचा।
दो भालू आता - जंगल से पहलवाना।
तीन कोयल आती - मीठे गीत सुनाती।
चार दिशा सुहानी - दादी सुनाती कहानी।
पाँच हिरन प्यारे - चौकड़ी भरते हैं सारे।
छः लंगूर आते - उछल कूद मचाते।
सात मीठे - मीठे आम - फलों का राजा उसका नाम।
आठ कुत्ते बड़े - बड़े - भौं भौं करते खड़े।
नौ घोड़े आते - सरपट दौड़ लगाते।
दस मछली रानी - खतम गिनती और कहानी

एक दो तीन चार।
आज शनि है कल इतवार
पाँच छः सात आठ।
याद करके मैं सारा पा
इससे आगे नौ और द
गिनती हुई पूरी बस

मैंने तोता पाला है।
कितना भोला भाला है।।
वह पिंजरे में रहता है।
मिट्ठू मिट्ठू कहता है।।

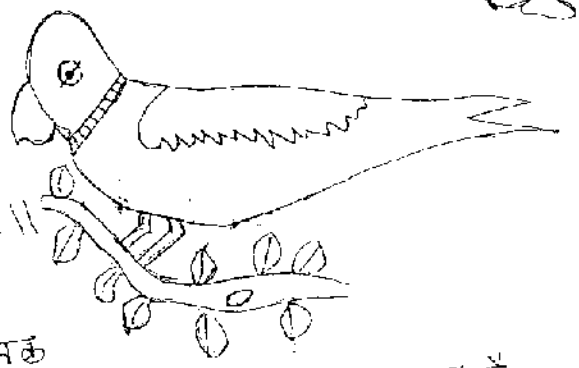

बतक

अहा बतक कैसी सुन्दर है। सारी चिड़ियों से बढ़कर है।
सुथरी साफ न मैली रहती। हमें बहुत ही अच्छी लगती।
आह! आह! कैसी छवि प्यारी। चन्द्र समान सफेद उजारी।
है अति सुन्दर पैर, चोंच, पर। गर्दन लंबी बड़ी मनोहर।
तैर - तैर कर पानी में यह। मन बहलाया करती है यह।
बालक देखत देखत हर्षाते घर से लाकर अन्न खिलाते।

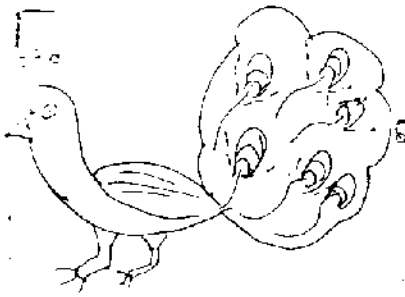

छिन छिन छिन मक्खी री छिन छिन छिन

मुन सुन सुन री सुन सुन सुन

पूरब जाये पश्चिम जाये और उड़े उत्तर- दक्षिण

कानी- लोंग उछलती फिरती कभी इधर तो कभी उधर

थकना कभी न सीखा तूने उड़ती रहती हर पल-छिन

चुनमुन जब भी निंदिया के घर सपनों में खो जाये है।

बैठ नाक पर जाती उसके चुनमुन शोर मचाये है।

चंचल चपल चुलबुली है तू हु पानी है तुझ कठिन

कूड़ा कचरा और गंदगी तेरे मन को भाती है।

रोगों के कीटाणु अपने पंखों पर ढो लाती है।

सावधान रहते सब तुझसे ढककर रखते फल-भोजन।

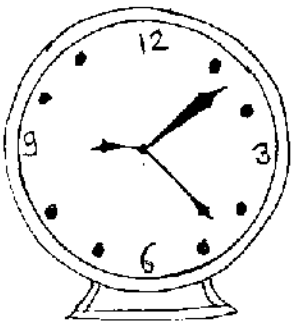

जग मे नाम कमाओ

नील गगन मे मस्त पवन मे
उड़ती चिड़िया रानी
फुदक फुदक कर घर आंगन मे
कहती एक कहानी।
जो बच्चे मेहनत करते हैं
आलस दूर भगाते।
आगे रहते सबसे बढ़ कर
जग मे नाम कमाते ॥

घड़ी

[illegible] क करती,
[illegible] रुकती
[illegible] जाती।
[illegible] ती।
[illegible] ती,
कभी [illegible]
[illegible]

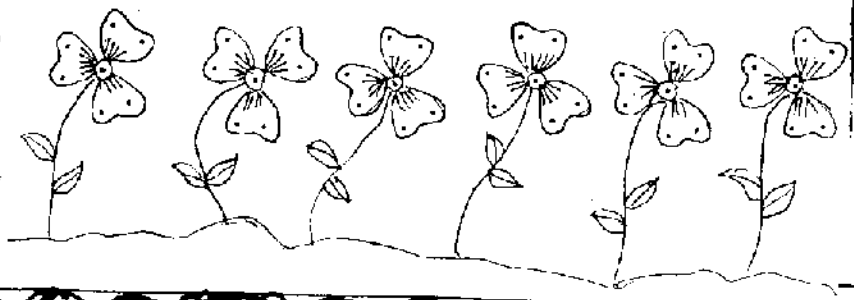

नीम लगाया

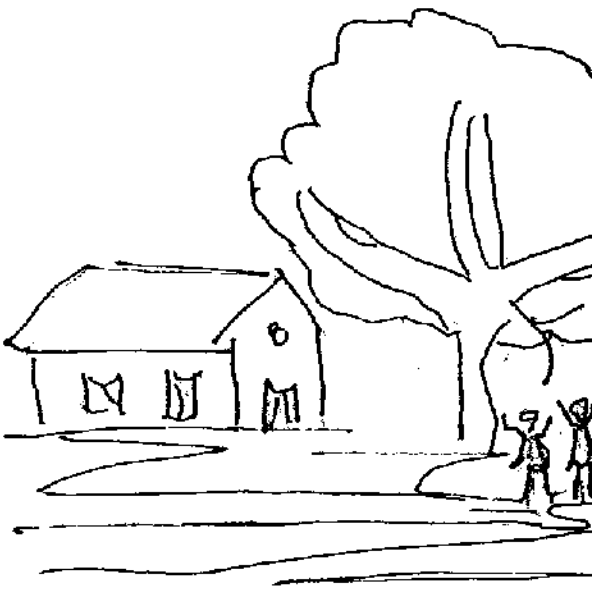

मैने एक आम का पौधा
घर के पास लगाया था
नन्हा पौधा लाया था
एक पौधा लाया था
पौधा पेड़ हो गया बढ़कर
आम ढेर से आये है
मीठे - मीठे आम तोड़कर
उसकी मौंजो खाये है।
मैंने नीम लगाया घर में
धीरे - धीरे लगाया घर में
आंगन में वह पेड़ नीम का
ऊपर उभर खड़ा हुआ
अब इस पर चिड़ियाँ बैठेंगी
झूला इस पर डालेंगे
सावन में फुहार आएगी
तब हम पेंग सम्हालेंगे
मैने एक लगाया बरगद
सोधा छाया आएगी
सूरज चाहे जितना चमके
किरण यहाँ रुक जाएगी

जिसने मां का प्यार न पाया।
उसने जीवन व्यर्थ गंवाया।।
वह क्या जाने ममता क्या है,
मातृत्व की व्याकुलता क्या है,
मां की लोरी गोदी का सुख क्या
भाव भरा मां का स्नेह क्या है
रहेगा सदा - सदा ललचाया।
जिसने मां का प्यार न पाया
एक डाल के ही दो फूल।
क्यों हम यह जाते हो भूल।
दोनों ही तेरी संतान।
रख तू सदा हृदय में ध्यान
सब को भाव एक समान
यदि पुत्री को समझा हीन
तो तू हो जायेगा दीन
उसकी महिमा को पहचान
कर न उसका अपमान
नर नारी सब एक समान

हम सबका यही संदेश
हरा भरा हो मध्य प्रदेश

* सच्ची शोभा *

[illegible] विद्यासागर की आर्थिक स्थिति कुछ दिनों बड़ी [illegible] रही थी लेकिन इन तंगी दिनों में भी उनकी माँ अपने द्वार से किसी को भूखा नहीं जाने देती थी।

कुछ ही समय बाद भाग्य ने पलटा खाया और विद्यासागर जी की पाँच सौ रुपये मासिक पर नौकरी लग गई। ऐसे ही समय में एक दिन उनका एक मित्र उनके घर आया उसने जब विद्यासागर जी की माँ के हाथ में हाथीदांत की चुड़ियाँ देखी और उन्हें साधारण से वस्त्र पहने देखा तो उससे रहा नहीं गया। उसने कहा माँजी इतने बड़े अधिकारी की माता होने के नाते ये मामुली-सी हाथीदांत की चुड़ियाँ आपके हाथों में शोभा नहीं देतीं आपके हाथों में तो सोने के आभूषण चाहिए। उसकी यह बात सुनकर विद्यासागर जी की माँ हँस पड़ी और बोली – बेटा विद्यासागर जी की माँ के हाथ की शोभा न तो हाथीदांत की चुड़िया हो सकती है न सोने-चांदी के आभूषण इन हाथों की शोभा तो सदा गरीबों की सेवा करते रहना ही हो सकता है अकाल पड़ा था न बेटा तब ये हाथ खिचड़ी बना-बनाके हजारों को खिलाते थे वही इनकी सच्ची शोभा थी मित्र ने मन ही मन ममता की उस साक्षात् प्रतिमा को प्रणाम किया।

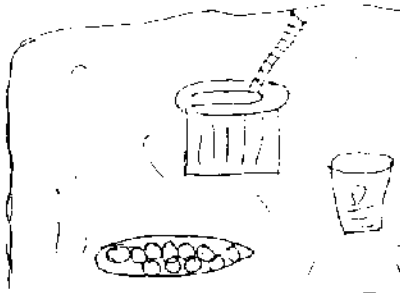

हाल हुए बेहाल

बन्दर मामा पहन पजामा
जा पहुँचे ससुराल
सर पर पगड़ी नीली पीली
कुर्ता पूरा लाल।
हलुआ पूड़ी दूध मलाई
छक कर खाया माल
गुब्बारे सा पेट हुआ जब
हाल हुआ बेहाल॥

इन्द्रधनुष

लाल - बैंगनी - नीला - पीला
देखो कितना रंग - रँगीला
आसमान में आया कैसे
इन्द्रधनुष ये छाया कैसे
देख इसे मुसकाता है क्यों
हाथ कभी न आता है क्यों

चिड़ियाँ

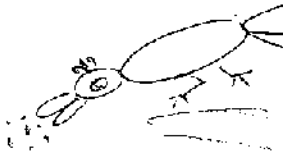

सूरज आता चिड़ियाँ आतीं
डाली-डाली धूम मचातीं
प्यारे-प्यारे गीत सुनाकर
बोलो हमको क्या समझातीं
सुबह-सवेरे सब उठ जाओ
अपने कामों में जुट जाओ

घर-घर दीप जलाओ
बच्चे सभी पढ़ने आओ।

भानु - पटेल
कक्षा 4 थी

शेर, मुर्गा और गधा

एक मुर्गा और गधा, गहरे मित्र थे। एक दिन, एक भूखा शेर शिकार की खोज में जंगल में घूम रहा था कि अचानक सामाना मुर्गे और गधे से हो गया। शेर ने सोचा, "यदि मैं उस गधे को पकड़ लूँ तो मेरे भोजन का बढ़िया प्रबन्ध हो जाएगा।

जब मुर्गे ने शेर को देखा तो वह जोर से चिल्लाया 'कुक्कड़ कूँ - कुक्कड़ कूँ,

गधे ने भी 'ढेचू, ढेचू' की आवाज में ज़ोर-ज़ोर से 'रेंक' कर मुर्गे का साथ दिया। दोनों की आवाज ने मिलकर एक अनोखा सा स्वर जंगल में गुँजा दिया।

जब शेर ने यह निराली सी दिल दहलाने वाली आवाज सुनी तो वह भी हिचक कर वापिस लौट गया। किन्तु मूर्ख गधे ने सोचा कि शेर उससे डरकर भागा है। इसलिये वह उसका पीछा करता हुआ भागा।

मूर्ख गधा, शेर का पीछा करता रहा। वह ऊँची आवाज में 'रेंकता' रहा ताकि शेर उससे डर जाए। चतुर शेर ने डरने का नाटक किया। इस तरह शेर धोखा देकर उसे गहरे जंगल में ले गया। जब वे घने जंगल में पहुँच गए तो शेर पीछे की ओर मुड़ा और एक दम गधे पर झपट पड़ा तथा उसका काम तमाम कर दिया।

शिक्षा

जरूरत से ज्यादा आत्म विश्वास,
हमें संकट में डाल सकता है।

=xoxoxox=

— भरो माँ जग में नूतन प्राण —

आओ बच्चो तुम्हें सिखायें अच्छी-अच्छी बात,
करने से पहले विचारना है अच्छी सौगात।
चलती बस में चढ़ो नहीं तुम. और कभी मत कू
सड़क पार जब भी करनी हो, आंखे कभी न
मूंदो। नियम तोड़ते जो ट्रैफिक का छोड़ो उनक
साथ, कभी सड़क पर जाकर बच्चो नहीं
खेलने लगना साइकिल पर हो या हो पैदल
कभी न बेढंग चलना सदा चलो तुम बाएं
अपने मुड़ो हिलाकर हाथ पत्थर या गुब्बा
भी तुम कभी न बस पर मारो बिना टिक
हम सफर करें यह कभी न मन में धार
सीखो नियम सिखाओ सबको बनो सभ्य
दिन - रात।

कु. हिना पथी

Action words
TIE
CARRY
TALK
EAT
Pick
DRAW
POUR

दोस्ती

एक था। उस में कई जानवर रहते थे।

जैसे और

इन्ही में से और घनिष्ठ मित्र थे।

यह चारों में हंसी- खुशी रह रहे थे कि एक दिन मे

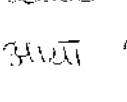

एक आया और मे बिछा दिया। के उस

में बेचारा फंस गया। के दोस्तो ने उसे बचाने

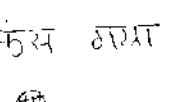

तरकीब निकाली। मे को ले जा रहा था तभी

के सामने थोड़ी दूरी पर ने बेहोश होने का नाटक

किया। ने को देखा और सोचा "अरे वाह! आज तो

बड़ा शिकार मिला है। ने को वही रखा और

की तरफ बढा जैसे ही के पास गया खड़ा

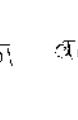

होकर भाग गया, और इतनी देर में को

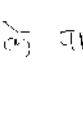

पास लाया और चुहे ने का कुतर कर उसे आ

कर दिया। इस तरह चारों की घनिष्ठ मित्रता के कारण

की जान बच गई।

घर-घर उजियारा फैलाए
बेटी जब शाला जाएगी

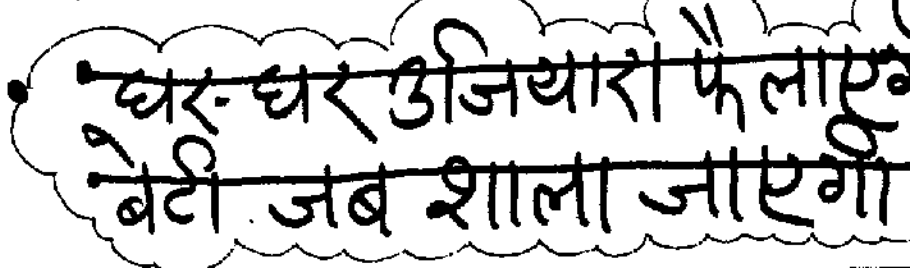

[illegible] Look at the Moon!
[illegible] shining up there!
[illegible] Mother, she looks
like a lamp in the air
Last Week, she Was smaller
[illegible] shaped like a bow
But now, she's grown bigger.
And round like an o!

Read and enjoy

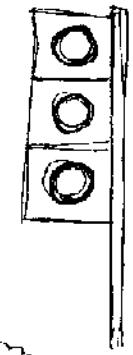

[illegible] says the Red light.
[illegible] says the green.
[illegible] says the orange.
[illegible] the light is green.

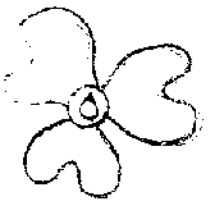

Off To School

Teddy Bear Turn around
Teddy Bear Teddy Bear
Touch the ground.
Teddy Bear Teddy Bear.

Polish your shoes,
Teddy Bear Teddy Bear
Go to school.

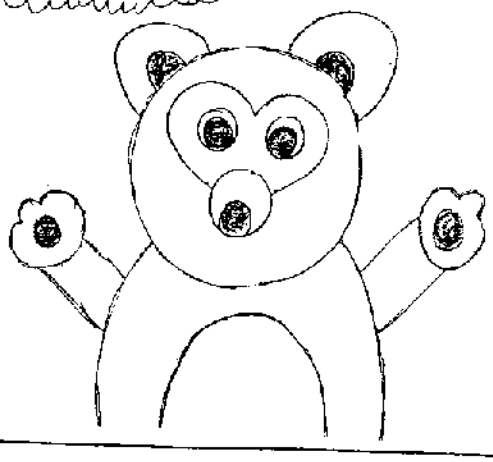

रेलगाड़ी

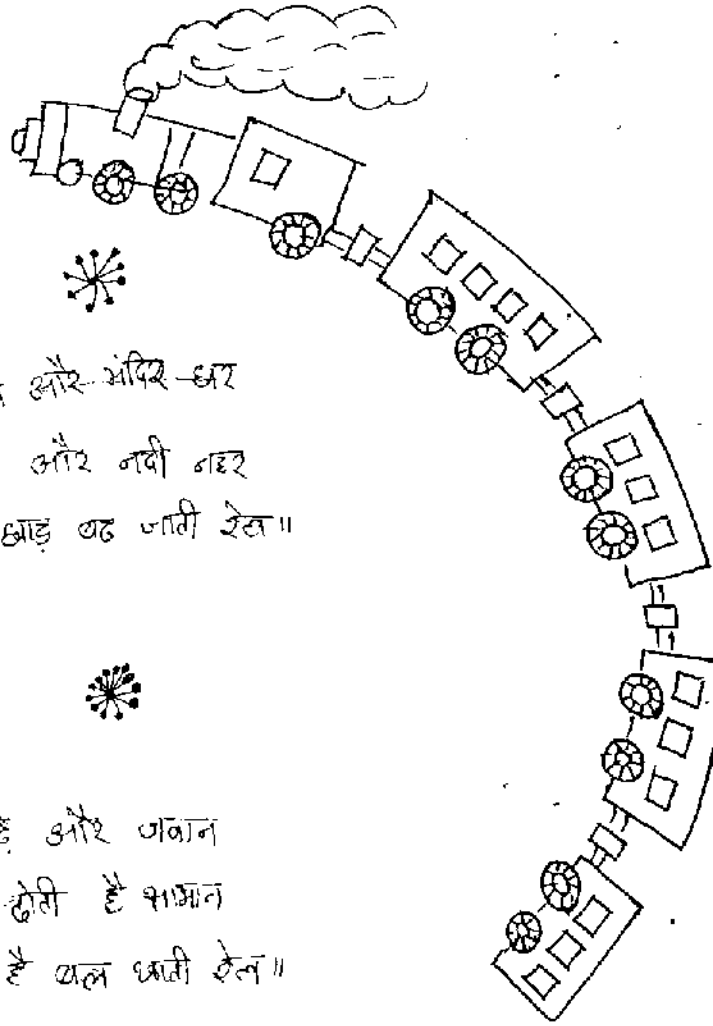

सीटी देती आती रेल
पैसेंजर हो कोई मेल
नगर गांव और मंदिर घर
खेत पेड़ और नदी नहर
छोड़ - छाड़ बढ़ जाती रेल॥

बॉम्बे, दिल्ली, वाराणसी
खुर्जा जयपुर और झांसी
दूर - दूर तक जाती रेल॥
बच्चे बूढ़े और जवान
हरदम ढोती है सामान
चलती है बल खाती रेल॥

मेहनत से करती है काम
कभी न करती है आराम
मंजिल तक पहुंचाती रेल
सीटी देती आती रेल॥

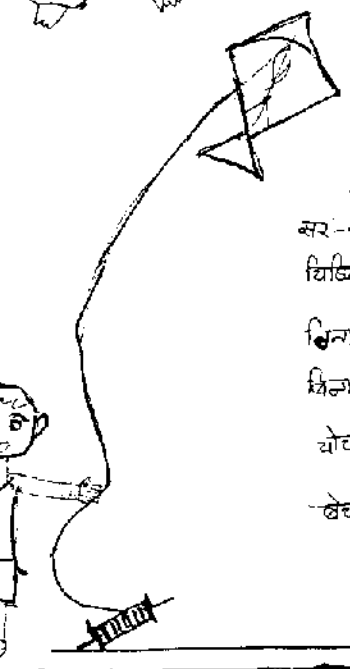

पतंग

सर - सर - सर - सर उड़ी पतंग
चिड़िया हुई देखकर दंग,
बिना पंख के उड़ती कैसे,
बिना पूंछ के मुड़ती कैसे,
चोंच बिना यह कैसे खाती
बेचारी कुछ बोल न पाती,

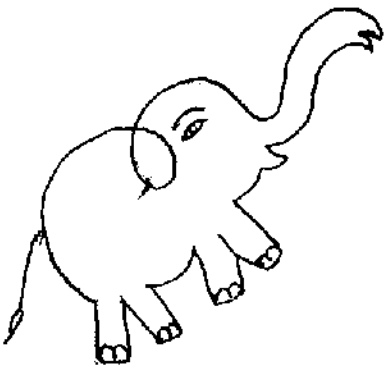

शानू कक्षा 4 थी

झूम हाथी झूम हाथी
झूम हाथी झूम हाथी।
झूम हाथी झूम हाथी।
राजा झूमे रानी झूमे झूमें राज कुमार।
घोड़े झूमे फौजें झूमें झूमें सब दरबार॥
हाथी झूम झूम झूम।
हाथी झूम झूम झूम॥
झूम झूम झूम झूम हाथी झूम हाथी।
धरती झूमे बादल झूमें सूरज चाँद सितारे
दुनिया झूमे दुनिया झूमें झूमें राज दुलारे॥
हाथी झूम झूम झूम।
हाथी झूम झूम झूम॥

सच सच बात बताएं हम
देखो पेड़ चढ़ गये हम
आया माली भागे हम
[illegible] पैर गिर गये हम।

[illegible]

[illegible] लहराये तिरंगा
[illegible] की
[illegible]
[illegible] धरती से
[illegible] तिरंगा
उनके [illegible] आ जायें
अपने [illegible]
पर [illegible] लहराये तिरंगा।

मेरी गुड़िया रानी है
इसकी एक कहानी है
शैतानी यह करती है
पर दादी से डरती है।

बैठा - बैठा छत के ऊपर
क्या करता है अरे कबूतर
दाना खा ले, पानी पीले,
[illegible] गुटर-गूँ गाना गाले।

वर्ग पहेली

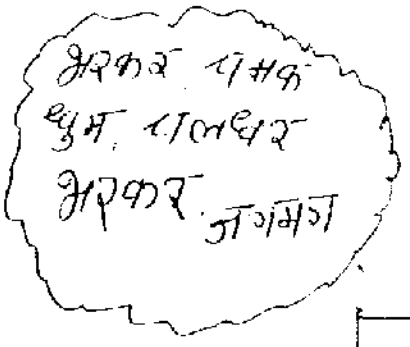

भरकर चमक
घूम, चलधर
भरकर, जगमग

[illegible] सुनाऊँ
[illegible] की सैर कराऊँ
[illegible] सब संसार
[illegible] इसका सार

[illegible] हो जाती
[illegible] करता।
[illegible] उड़ता हूँ
[illegible] बैठा रहता

ट्रिन - ट्रिन है घण्टी बजती
मैं आवाज लगाता हूँ।
चोगा उठे तो चुप हो जाऊँ
बोलो, क्या कहलाता हूँ॥

[illegible] जाती
[illegible] कराता।
[illegible] काम
बोलो [illegible] है नाम॥

एक विचित्र ऐसी चिज
उजली जमीन काला बीज
जो मनुष्य इससे करते प्यार
वे बन जाते होशियार।

चाँद सा चेहरा गोल मोल है
बिना पांवो के चलता।
राजा रंक सभी का दुलारा
परिश्रम से है मिल [illegible]

रंग है उसका [illegible]
[illegible]
पीटा है [illegible]
कीमती है [illegible]

कु. टीना कक्षा 4
कु. नाजिया कक्षा 3

बाल केबिनेट

पत्रिका निर्माण कार्यशाला

बच्चे के लिए जो सोचा, वह कर दिखाया, उत्कृष्ट कार्य पर शिक्षकों का किया गया सम्मान, विद्यालयों में भी हुए आयोजन

शिक्षा को दिए नए आयाम

उत्कृष्ट शिक्षा पर मिला सम्मान

सेंट टेरेसा स्कूल में हुए आयोजन

विद्यालय को फर्नीचर

धार। नालछा विकासखंड के ग्राम मगजपुरा के विद्यालय में ग्रामीणों के सहयोग से विद्यालय को 10 हजार रुपए का फर्नीचर प्राप्त हुआ। ... 15 अगस्त तक और फर्नीचर प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है। यह जानकारी विद्यालय के शिक्षक इरफान पठान ने दी।

17-8-11 नईदुनिया

पत्रिका का विमोचन

धार। प्राथमिक विद्यालय ग्राम मगजपुरा द्वारा बच्चों की हस्तलिखित पत्रिका लगातार चलाई जा रही है। इसका विमोचन राज्यमंत्री रंजना बघेल ने धार में गत दिवस किया। इस मौके पर शिक्षक इरफान पठान आदि उपस्थित थे।

नईदुनिया

इंदौर, शुक्रवार, 14 नवंबर 2014

रास्ते में रुककर कलेक्टर ने किया बच्चों की पत्रिका का विमोचन

खेल-खेल में पढ़ रहे आदिवासी बच्चे

शिक्षा के क्षेत्र में नित नए नवाचार करते आदिवासी क्षेत्र के शिक्षक

कैसे उभर किया शैचालय कक्ष

दीवारों पर संजोए विभिन्न विषयों के चार्ट

हिन्दी, अंग्रेजी और गणित की अवधारणाएं

2006-07 में मिला अवार्ड

अक्षर ज्ञान के बाद अब शब्दों की बारी

सरकारी स्कूल में नवाचार से छात्रों की संख्या बढ़ी

अभिनव पहल

पर्यावरण चेतना